ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 25th Nov 2017, Revised on 30th Nov 2017,Accepted 05thDec 2017

शोध पत्र

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में क्षेत्र एवं प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षक उपलब्धता (1994–2010) की प्रवृत्ति

* **डॉ. मुरलीधर मिश्रा,** एसोसिएट प्रोफेसर, एवं **सुरेन्द्र कुमार**, शोधार्थी
शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान – 304022
Email:dr.mdm@live.com, 9414028630 (M)

मुख्य शब्द : *प्राथमिक विद्यालय, ग्रामीण और शहरी, प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षक, शिक्षक उपलब्धता, विकासात्मक अध्ययन आदि।*

सारांश

राजस्थान राज्य के अजमेर संभाग में स्थितप्राथमिक विद्यालयों में 1994 से 2010 तक क्षेत्रवार (ग्रामीण और शहरी) तथा प्रशिक्षण के आधार पर (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित) शिक्षकों की उपलब्धता की प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया। इस विकासात्मक अध्ययन में समय श्रेणी प्रदत्तों का रेखाचित्रीय प्रस्तुतीकरण, आवृत्ति विश्लेषण, प्रतिशत विश्लेषण और त्रिवर्षीय, दशकीय व कुल वृद्धि दर का विश्लेषण किया गया है। शिक्षकों की उपलब्धता की प्रवृत्ति में निहित सन्दर्भों को समझने के लिए शैक्षिक योजनाओं व कार्यक्रमों से सम्बन्धित सूचनाओं तथा विशेषज्ञों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं को आधार बनाया गया। इस विकासात्मक अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया कि दोनों की दशक में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति ऋणात्मक व ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति धनात्मक रही है। कुल आलोच्य अवधि में अजमेर संभाग के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक–उपलब्धता में वृद्धि शहरी क्षेत्र की तुलना में अधिक रही। शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता की कमी के प्रमुख कारणों में विद्यालयों का क्रमोन्नत हो जाना, नवनियुक्त अध्यापकों को शहरी क्षेत्र में नियुक्ति नहीं देना, अध्यापकों का स्थानान्तरण व सेवानिवृत्त होना रहे।दोनों ही दशकों में प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि दर धनात्मक रही। कुल आलोच्य अवधि में अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में अप्रशिक्षित शिक्षकों में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में अधिक रही। अप्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि दर अधिक रहने के प्रमुख कारणों में इस स्तर की शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की कमी तथा राजीव गाँधी पाठशालाओं और अराजकीय विद्यालयों में नामांकन बढ़ने से अप्रशिक्षित शिक्षकों को नियुक्त करना रहे हैं।

प्रस्तावना

राजस्थान राज्य विषम भौगोलिक स्थिति, दूर–दूर बिखरी हुई आबादी, संसाधनों की कमी, जनसंख्या में सामान्य से अधिक वृद्धि वंचित वर्ग व महिला वर्ग में शैक्षिक वातावरण का अभाव एवं निरन्तर पड़ने वाले अकाल आदि कारणों के होते हुए भी शिक्षा के प्रसार में जागरूक रहा है। आरम्भिक शिक्षा के विकास हेतु राज्य स्तर पर प्रशासन का विकेन्द्रीकरण किया गया है। इस विकेन्द्रीकरण के क्रम में संभाग को इकाई के रूप में मानकर प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शिक्षा के विकास हेतु योजनाएँ चलायी जा रही हैं। राजस्थान राज्य का अजमेर संभाग सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशिष्ट रहा है।सरकार द्वारा संभाग में प्राथमिक शिक्षा के विकास हेतु अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम चलाये गये हैं तथा शिक्षण संस्थाओं का भी क्रमिक विकास हुआ है। इन अनेक विशेषताओं के कारण अजमेर संभाग प्राथमिक शिक्षा के विकास के अध्ययन हेतु एक विशिष्ट सन्दर्भ प्रदान करता है।

प्राथमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक विकास के संकेतक के रूप में राजकीय एवं निजी विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता तथा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता की प्रवृति का अध्ययन अनेक शोधकर्ताओं ने किया है। इनमें से शर्मा (1977) ने दिल्ली में 1913 से 1968 के दौरान प्राथमिक शिक्षा के विकास के अध्ययन में पाया कि 1935–36 तक प्रशिक्षित शिक्षकों का प्रतिशत बहुत काम था। लेकिन 1935 के पश्चात् इसमें सुधार हुआ। 1947 में 93.5 प्रतिशत अध्यापक प्रशिक्षित थे। 1968 तक 99.9 प्रतिशत पुरुष और महिला प्रशिक्षित शिक्षक थे। कपाड़िया (1984) ने 1947 से 1980 के मध्य गुजरात में प्राथमिक शिक्षा में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापिकाओं की संख्या प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों से कम पायी गयी। मयानी (1989) ने स्वतन्त्रता के पश्चात् गुजरात में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विकास का अध्ययन किया और पाया कि प्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या में वृद्धि हो रही हैं। राल्ते (1990) ने मिजोरम में स्वतन्त्रता के पश्चात् प्राथमिक शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। न्यादर्श वाले विद्यालयों में 53.73 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षित थे, जिनमें महिला शिक्षक 43 प्रतिशत व पुरूष शिक्षक 66.9 प्रतिशत थे। 1971–72 में 90 प्रतिशत शिक्षक दसवीं पास नहीं थे। जबकि 1986–87 में यह प्रतिशतता 69.45 हो गयी। खांगज्राक्पम (1997) ने मणिपुर के विशेष संदर्भ में भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा के विकास के अध्ययन में पाया कि प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की व सबके लिए शिक्षा कार्यक्रम की मुख्य समस्याओं में शैक्षिक संस्थानों का आधारभूत ढाँचा, उच्च ड्रॉप आऊट दर, महिला और प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी, ग्रामीण और पहाड़ी क्षेत्रों में कम और बिखरे हुए आवास का होना हैं। सुराणा (2003) ने राजस्थान के एक जिले में शैक्षिक विकास का पार्श्वचित्र के अध्ययन में पाया कि अध्यापकों की उपलब्धता में धनात्मक वृद्धि के साथ–साथ अप्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या में आंशिक वृद्धि हुई है। चुआंगो (2004) ने मिजोरम में पूर्व–विद्यालयीन शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन में अधिकांश विद्यालयों में अप्रशिक्षित स्टाफ को कार्यरत पाया। सिंह (2009) ने अपने अध्ययन के निष्कर्षों में प्रशिक्षित अध्यापकों के मामले में उत्तर प्रदेश में 97 प्रतिशत अध्यापक प्रशिक्षित जबकि केरल में 99 प्रतिशत अध्यापक प्रशिक्षित पाये। शर्मा (2010) के अनुसार प्राथमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षकों की संख्या अधिक थी। अप्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या लगभग नगण्य थी। प्राथमिक स्तर पर महिला शिक्षकों की उपलब्धता बहुत कम है। सक्सेना (2012) ने अपने शोध अध्ययन में राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक विकास की प्रवृत्ति (1986–2008) ने पाया कि शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों शिक्षकों की उपलब्धता में सकारात्मक वृद्धि हुई है। निजी विद्यालयों की वृद्धि शहरी क्षेत्रों में अधिक रही है। प्रशासन के आधार पर सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या में कमी आयी है। जबकि निजी विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या में वृद्धि हुई है। इसी के साथ दो दशकों में अप्रशिक्षित की तुलना में प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या में वृद्धि हुई है। कुमार (2013) ने पाया कि दिल्ली स्थित माध्यमिक विद्यालयों में प्रशासन के आधार पर नामांकन में लगातार वृद्धि हुई तथा सभी शिक्षक प्रशिक्षित थे।

शैक्षिक प्रशासन के विकेन्द्रीकरण के क्रम में गुप्ता (1996), सुराणा (2003), मैखुरी (2005), नन्दा (2006) व शर्मा (2010), कुमार एवं मिश्रा (2015) ने अपने अध्ययन राज्य के बजाय संभाग, जिला या खण्ड स्तर को लक्ष्य मानकर किये हैं। अतः इस अजमेर संभाग में क्षेत्रवार और प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षकों की उपलब्धता के सम्बन्ध में कतिपय प्रश्न उपस्थित हुए, यथा– अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता की प्रवृत्ति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसार किस प्रकार रही है? क्या शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता की प्रवृत्ति एक समान रही है? प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता की

प्रवृत्ति में प्रशिक्षण के आधार पर कितनी भिन्नता है? क्या प्रशिक्षण के आधार पर समय के सापेक्ष प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में बदलाव आया है? यह जानने के क्रम में क्षेत्रवार (ग्रामीण और शहरी) तथा प्रशिक्षण के आधार पर (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित) शिक्षकों की उपलब्धता की प्रवृत्ति का विश्लेषण किया गया है। उपर्युक्त अनेक प्रश्नों एवं स्थितियों को दृष्टिगत रखकर शोधकर्ता ने प्राथमिक विद्यालयों में क्षेत्रवार (ग्रामीण और शहरी) तथा प्रशिक्षण के आधार पर (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित) शिक्षकों की उपलब्धता का अध्ययन करना निश्चित किया।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के अग्रांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये–

1. अजमेर संभाग में 1994 से 2010 तक ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता की प्रवृत्तिका अध्ययन करना।
2. अजमेर संभाग में 1994 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित और अप्रशिक्षितशिक्षक उपलब्धता कीप्रवृत्तिका अध्ययन करना।
3. शैक्षिक योजनाओं व कार्यक्रमों तथा विशेषज्ञों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के सन्दर्भ में अजमेर संभाग में 1994 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयों में क्षेत्रवार (ग्रामीण और शहरी) तथा प्रशिक्षण के आधार पर (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित) शिक्षकों की कुल उपलब्धता की प्रवृत्तिके सन्दर्भों की व्याख्या करना।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अजमेर संभाग में 1994 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयों में क्षेत्रवार (ग्रामीण और शहरी) तथा प्रशिक्षण के आधार पर (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित) शिक्षक उपलब्धता कीप्रवृत्तिका अध्ययन करना था। आलोच्य अवधि (1994–2010 तक) में अजमेर संभाग ग्रामीण और शहरीप्राथमिक विद्यालयों में तथा प्रशिक्षित और अप्रशिक्षितशिक्षकों की उपलब्धता का वर्णन होने के कारण यह अध्ययन वर्णनात्मक प्रकार का है। ग्रामीण और शहरी विद्यालयीन तथा प्रशिक्षित और अप्रशिक्षितशिक्षकों की उपलब्धता को अध्ययन की एक इकाई के रूप में लेने के कारण यह एक वैयक्तिक अध्ययन है। इस अध्ययन में चरों की वर्तमान स्थिति एवं पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट किया गया है। यह अध्ययन अतीत और वर्तमान से सम्बन्धित है तथा अवधि विशेष में ग्रामीण और शहरी प्राथमिक विद्यालयों में तथा प्रशिक्षित और अप्रशिक्षितशिक्षक उपलब्धताकी प्रवृत्ति का विश्लेषण होने के कारण यह एक विकासात्मक अध्ययन है।

न्यादर्श

इस अध्ययन में अजमेर संभाग में 1994 से 2010 तक सभी शैक्षिक स्तरों (प्रारम्भिक, माध्यमिक एवं उच्च) में से एक इकाई प्राथमिक विद्यालयों में क्षेत्रवार (ग्रामीण और शहरी) तथा प्रशिक्षण के आधार पर (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित) शिक्षकों की उपलब्धतामें शिक्षक उपलब्धता (1994–2010) को शैक्षिक शोध अध्ययन की सौद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि से अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में लिया गया है। क्षेत्रवार (ग्रामीण और शहरी) तथा प्रशिक्षण के आधार पर (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित) प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता की प्रवृत्ति में निहित सन्दर्भों को

समझने के लिए 10 शिक्षाविदों, 3 शिक्षा अधिकारियों, 10 प्रधानाध्यापकों एवं 20 प्राथमिक विद्यालयीन शिक्षकों का विशेषज्ञ के रूप में चयन न्यादर्श चयन की सौद्देश्यपूर्ण विधि से किया गया।

अध्ययन उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोध उपकरण के क्रम में प्राथमिक विद्यालयों में क्षेत्रवार (ग्रामीण और शहरी) तथा प्रशिक्षण के आधार पर (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित) शिक्षकों की उपलब्धता से सम्बन्धित प्रदत्तों का संकलन करने के लिए शोधकर्ता द्वारा निरूपित प्रारूपों का उपयोग किया गया। इन प्रारूपों का सतत् विकास प्रदत्तों की आवश्यकता एवं उपलब्धता के अनुसार किया गया।

प्रदत्तों के स्रोत

प्रथम एवं द्वितीय शोध उद्देश्य से सम्बन्धित प्रदत्त द्वितीयक स्रोत से तथा तृतीय शोध उद्देश्य के लिए सम्बन्धित प्रदत्त प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों से संकलित किये गये।

प्रदत्तों की प्रकृति

इस अध्ययन में अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में क्षेत्रवार (ग्रामीण और शहरी) तथा प्रशिक्षण के आधार पर (प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित) शिक्षकों की उपलब्धता से संबंधित समय श्रेणी प्रदत्तों (संख्यात्मक/मात्रात्मक) प्रदत्तों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया

अजमेर संभाग में 1994 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता की प्रवृत्ति का विश्लेषण एवं व्याख्या निर्दिष्ट चर– क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) तथा शिक्षक प्रशिक्षण (प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित) के संदर्भ में करते हुए शोध निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। प्रदत्त विश्लेषण हेतु अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालयों में क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) तथा शिक्षक प्रशिक्षण (प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित) शिक्षकों की उपलब्धता के 1994 से 2010 तक के संख्यात्मक प्रदत्तों का सारणीयन किया गया। अध्ययन के आरम्भ में इन सारणियों को व्यवस्थित करने एवं गणना की सुविधा के लिए तीन–तीन वर्षों के अन्तराल पर छः (6) समय श्रेणी बिन्दुओं (1991–92, 1994–95, 1997–98, 2000–01, 2003–04, 2006–07, 2009–10) में वर्गीकृत करने का निश्चय किया गया था। लेकिन प्रयासों के बावजूद भी वर्ष 1991 से वर्ष 1993 तक के प्रदत्त उपलब्ध नहीं होने के कारण शोध की आन्तरिक वैद्यता को महत्व देते हुए 'समय श्रेणी विश्लेषण' का आरम्भ सत्र 1994–95 से किया गया। परिणामतः अध्ययन की वास्तविक आलोच्य अवधि को दो तार्किक कालखण्डों 1994–2000 को प्रथम/पहला दशक एवं 2001–2010 को द्वितीय दशक के रूप में वर्गीकृत किया गया है। उपर्युक्त पाँच समय श्रेणी बिन्दुओं के आधार पर क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) तथा शिक्षक प्रशिक्षण (प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित) वार शिक्षक उपलब्धता की प्रवृत्ति का विश्लेषण रेखाचित्रीय प्रस्तुतीकरण, आवृत्ति विश्लेषण, प्रतिशत विश्लेषण और त्रिवर्षीय, दशकीय व कुल वृद्धि दर का विश्लेषण किया गया है। तृतीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए संरचित साक्षात्कार से प्राप्त गुणात्मक प्रदत्तों का गुणात्मक विश्लेषण प्रथम उद्देश्य के साथ ही संदर्भगत स्पष्टता की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है।

क्षेत्र के आधार पर शिक्षक उपलब्धता

अजमेर संभाग में वर्ष 1994 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयों में स्थान के आधार पर शहरी क्षेत्र के शिक्षकों एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की उपलब्धता की प्रवृत्ति को विश्लेषित किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में स्थान के

आधार पर शहरी क्षेत्र के शिक्षकों एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की उपलब्धता से संबंधित समय श्रेणी प्रदत्तों के आधार पर रेखाचित्र 1 और सारणी 1 का निर्माण किया गया है।

रेखाचित्र 1

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में स्थान के आधार पर शिक्षक उपलब्धता

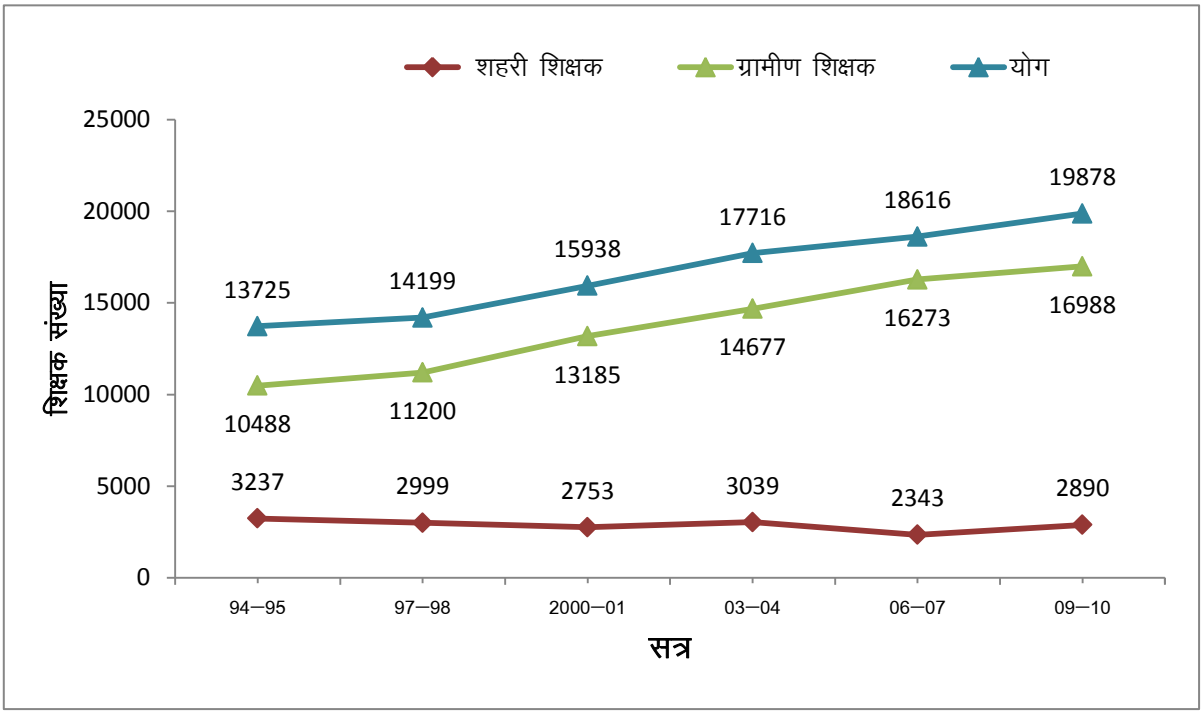

सारणी 1

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में स्थान के आधार पर शिक्षक उपलब्धता

वर्ष	शहरी			ग्रामीण		
	शहरी शिक्षक	वृद्धि/कमी	वृद्धि दर	ग्रामीण शिक्षक	वृद्धि/कमी	वृद्धि दर
1994–95	3237	–	–	10488	–	–
1997–98	2999	–238	–7.35	11200	712	6.79
2000–01	2753	–246	–8.20	13185	1985	17.72
2003–04	3039	286	10.39	14677	1492	11.32
2006–07	2343	–696	–22.90	16273	1596	10.87
2009–10	2890	543	23.18	16988	715	4.39
कुल वृद्धि दर						
वर्ष	शहरी शिक्षकों में वृद्धि/कमी		वृद्धि दर	ग्रामीण शिक्षकों में वृद्धि/कमी		वृद्धि दर
1994–2010	–347		–10.72	6500		61.98
दशकीय वृद्धि दर						
1994–2000	–484		–14.95	2697		25.72
2001–2010	–201		–6.50	2459		16.92

रेखाचित्र एवं सम्बन्धित सारणी 1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अजमेर संभाग के प्राथमिक स्तर के शहरी विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में जहाँ सर्वाधिक वृद्धि दर 2009–10 में 23.18 प्रतिशत धनात्मक रही। वहीं न्यूनतम वृद्धि दर 2006–07 में 22.90 प्रतिशत ऋणात्मक रही। अन्य बिन्दु वर्षों में वृद्धि दर अनियमित रूप से कभी धनात्मक व कभी ऋणात्मक रही। लेकिन अधिकांश बिन्दु वर्षों में वृद्धि दर ऋणात्मक रही। इसी प्रकार बिन्दु वर्ष 1994–95 में अजमेर संभाग में ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में सर्वाधिक वृद्धि दर 2000–01 में 17.72 प्रतिशत धनात्मक रही वहीं न्यूनतम वृद्धि दर वर्ष 2009–10 में 4.39 प्रतिशत धनात्मक रही। अन्य बिन्दु वर्षों में वृद्धि दर सतत् धनात्मक रही। प्रथम दशक में अजमेर संभाग में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की वृद्धि दर ऋणात्मक रही वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की वृद्धि दर धनात्मक रही। इसी प्रकार द्वितीय दशक में जहाँ शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की वृद्धि दर 6.50 प्रतिशत ऋणात्मक रही वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की वृद्धि दर धनात्मक रही है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों की दशक में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति ऋणात्मक व ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति धनात्मक रही है। अर्थात् अजमेर संभाग में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति अधिक रही है। कुल आलोच्य अवधि में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों में वृद्धि की प्रवृत्ति अधिक रही है।

विशेषज्ञों के अनुसार बिन्दु वर्ष 2009–10 में अजमेर संभाग में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में सर्वाधिक वृद्धि होने का मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत राजकीय शिक्षकों का शहरी क्षेत्र में स्थानान्तरण करवाना व शहरी क्षेत्र में निजी विद्यालयों में वृद्धि होना रहा है, वहीं बिन्दु वर्ष 2006–07 में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता की कमी का कारण विद्यालयों का क्रमोन्नत होना, नवनियुक्त अध्यापकों को शहरी क्षेत्र में नियुक्ति नहीं देना, अध्यापकों का स्थानान्तरण व अध्यापकों का सेवानिवृत्त होना रहा है। अजमेर संभाग में ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में बिन्दु वर्ष 2000–01 में शिक्षक उपलब्धता में सर्वाधिक वृद्धि का मुख्य कारण प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में वृद्धि होना व राज्य सरकार द्वारा पैराटीचर्स की भर्ती करना रहा है। वहीं बिन्दु वर्ष 2009–10 में शहरी शिक्षकों की उपलब्धता में कमी आने का मुख्य कारण नये विद्यालयों का खुलना, लेकिन शिक्षकों की नयी नियुक्ति का न होना, शिक्षकों का सेवानिवृत व पदोन्नत होना हो सकते हैं।

प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षक उपलब्धता

अजमेर संभाग में वर्ष 1994 से 2010 तक प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षण के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता की प्रवृत्ति को विश्लेषित किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षण के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता से संबंधित समय श्रेणी प्रदत्तों के आधार पर रेखाचित्र 2 और सारणी 2 का निर्माण किया गया है।

रेखाचित्र 2

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षक उपलब्धता

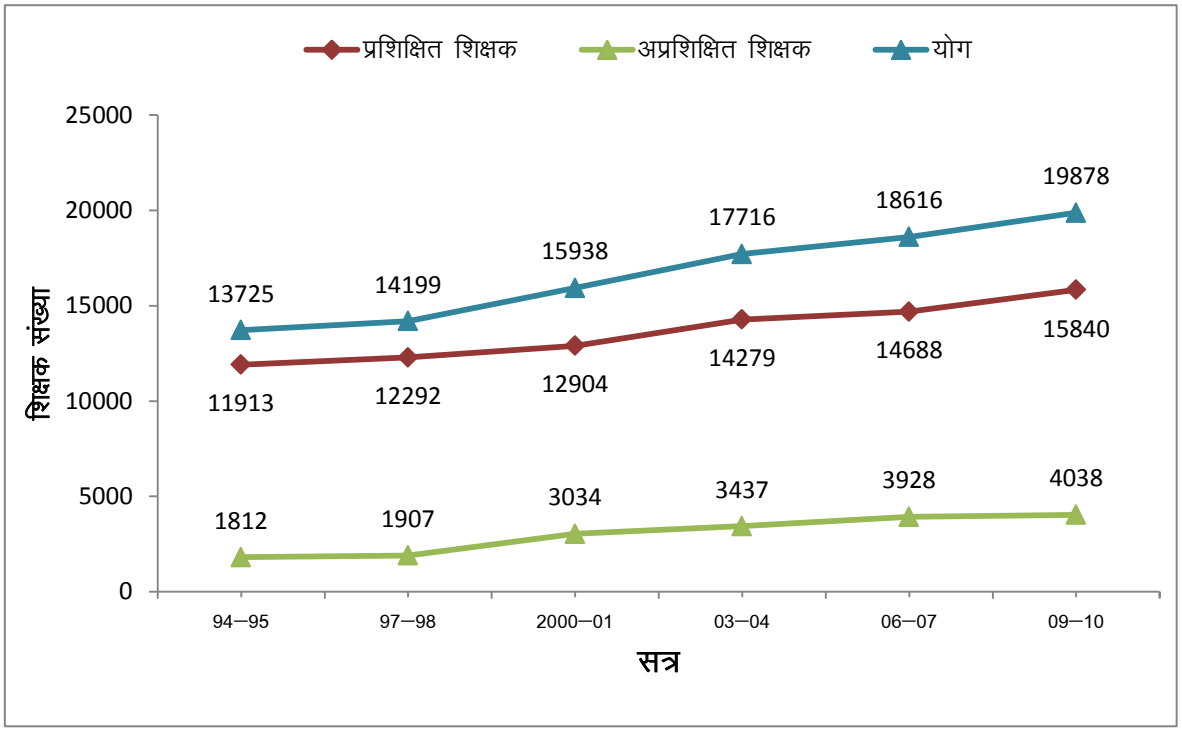

सारणी 2

अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षक उपलब्धता

वर्ष	प्रशिक्षित			अप्रशिक्षित		
	प्रशिक्षित शिक्षक	वृद्धि/कमी	वृद्धि दर	अप्रशिक्षित शिक्षक	वृद्धि/कमी	वृद्धि दर
1994–95	11913	–	–	1812	–	–
1997–98	12292	379	3.18	1907	95	5.24
2000–01	12904	612	4.98	3034	1127	59.10
2003–04	14279	1375	10.66	3437	403	13.28
2006–07	14688	409	2.86	3928	491	14.29
2009–10	15840	1152	7.84	4038	110	2.80
कुल वृद्धि दर						
वर्ष	प्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि/कमी		वृद्धि दर	अप्रशिक्षित शिक्षकों कीवृद्धि/कमी		वृद्धि दर
1994–2010	3927		32.96	2226		112.85
दशकीय वृद्धि दर						
1994–2000	991		8.32	1222		67.44
2001–2010	1804		12.85	454		12.67

रेखाचित्र एवं सारणी 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों की सर्वाधिक वृद्धि दर 2003–04 में 10.66 प्रतिशत धनात्मक रही वहीं न्यूनतम वृद्धि की प्रवृत्ति बिन्दु वर्ष 2006–07 में रही। अन्य बिन्दु वर्षों में वृद्धि दर अनियमित रूप से सतत् धनात्मक रही। इसी प्रकार अप्रशिक्षित

शिक्षकों में सर्वाधिक वृद्धि दर 2000–01 में 59.10 प्रतिशत धनात्मक रही वहीं अप्रशिक्षित शिक्षकों में न्यूनतम वृद्धि दर 2009–10 में 2.80 प्रतिशत धनात्मक रही। अन्य बिन्दु वर्षों में अनियमित उतार–चढ़ाव के साथ वृद्धि दर धनात्मक रही। प्रथम दशक में प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि दर धनात्मक रही। इसी प्रकार द्वितीय दशक में प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि दर धनात्मक रही है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रथम दशक में अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में अप्रशिक्षित शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति अधिक धनात्मक रही है। द्वितीय दशक में प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित दोनों प्रकार के शिक्षकों में वृद्धि की प्रवृत्ति लगभग समान रही। इस प्रकार कुल आलोच्य अवधि में अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में जहाँ प्रशिक्षित शिक्षकों में वृद्धि दर 32.96 प्रतिशत धनात्मक रही वहीं अप्रशिक्षित शिक्षकों में वृद्धि दर 122.85 प्रतिशत धनात्मक रही है। अर्थात् अप्रशिक्षित शिक्षकों में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में अधिक रही है।

विशेषज्ञों के अनुसार बिन्दु वर्ष 2003–04 में अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि का मुख्य कारण शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं (महाविद्यालय) में वृद्धि होने से प्रशिक्षण की सुलभता बढ़ना, राज्य सरकार के नीतिगत निर्णय के अनुपालन में विशेषरूप से खोले गये राजीव गाँधी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करवाना रहा है। बिन्दु वर्ष 2006–07 में प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों में वृद्धि की प्रवृत्ति कम रहने का मुख्य कारण विद्यालयों का क्रमोन्नत होना रहा है। बिन्दु वर्ष 2000–01 में प्राथमिक विद्यालयों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि का प्रमुख कारण शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं का कमी, राजीव गाँधी पाठशालाओं तथा अराजकीय विद्यालयों में नामांकन बढ़ने से अप्रशिक्षित शिक्षकों को नियुक्त करना रहा। वहीं बिन्दु वर्ष 2009–10 में अप्रशिक्षित शिक्षकों में कमी का मुख्य कारण निजी प्राथमिक विद्यालयों का क्रमोन्नत होना व राजीव गाँधी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करवाना, बी.एस.टी.सी. संस्थाओं में वृद्धि का होना, युवाओं में प्रशिक्षण प्राप्त कर स्थाई रोजगार प्राप्त करने की इच्छा का होना, अन्य राज्यों से प्रशिक्षण प्राप्त करना आदि रहे हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोधकार्य में अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालयों में कुल शिक्षक उपलब्धता का अध्ययन क्षेत्रवार एवं प्रशिक्षण के आधार पर किया गया है। इस शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर इस अध्ययन के निम्नलिखित निहितार्थ हो सकते हैं–

1. अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में दोनों ही दशकों में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति ऋणात्मक व ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति धनात्मक रही है।ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति का धनात्मक रहना जहाँ इस क्षेत्र में प्राथमिक स्तर के शिक्षण कार्य के लिए एक सराहनीय कदम माना गया है। वहीं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति ऋणात्मक रहना गहन चिंता का विषय है। शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के लिए प्रभावशाली शिक्षण की व्यवस्था के क्रम में राज्य सरकार को चाहिए कि वे वह अविलम्ब इस क्षेत्र में शिक्षक उपलब्धता को बढ़ाये ताकि विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जा सके।

2. स्थान के आधार पर शिक्षक उपलब्धता के अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षक उपलब्धता की तुलना में शहरी क्षेत्र में शिक्षक उपलब्धता बहुत कम रही है जो शहरी क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा के लिए जनक है। अतः योजनाकारों व नीति निर्माताओं को शहरी क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर शिक्षक उपलब्धता बढ़ाने के सुनियोजित दीर्घकालीन प्रयास करने चाहिए।
3. कुल आलोच्य अवधि के प्रथम एवं द्वितीय दोनों ही दशकों में प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि दर धनात्मक रही है। प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता का बढ़ना जहाँ सराहनीय है वहीं अप्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि दर का लगातार धनात्मक रहना चिंता जनक है। इससे अप्रशिक्षित शिक्षकों की मौजूदगी से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लक्ष्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। अतः सरकार को राजकीय एवं निजी विद्यालयों में केवल प्रशिक्षित शिक्षक ही नियुक्त हों इसका विनिश्चयन करना चाहिए।
4. अध्ययन के निष्कर्ष से यह स्पष्ट हुआ है कि राज्य सरकार की प्राथमिक शिक्षा के प्रति नीति अजमेर संभाग के प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित या अप्रशिक्षित शिक्षकों के बढ़ने और घटने के पीछे प्रमुख कारण रही है। प्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि का मुख्य कारण जहाँ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं (महाविद्यालय) में वृद्धि होना रहा, वहीं राजीव गाँधी प्राथमिक विद्यालयों में अप्रशिक्षित शिक्षकों को नियुक्ति देने के चलते से अप्रशिक्षित शिक्षकों की वृद्धि हुई। अतः शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की सुलभता बढ़ाते हुए शिक्षक प्रशिक्षण को सुलभ बनाने एवं किसी भी सूरत में अप्रशिक्षित शिक्षकों को नियुक्त नहीं करने के दृढ़ नीतिगत निर्णय को लागू करने से अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या में कमी आ सकती है।
5. बी.एस.टी.सी. संस्थाओं में वृद्धि का होना, युवाओं में शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर स्थाई रोजगार प्राप्त करने की इच्छा का होना, युवाओं में अन्य राज्यों से भी प्रशिक्षण प्राप्त करना, राजीव गाँधी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त अप्रशिक्षित शिक्षकों को योजनाबद्ध ढ़ंग से प्रशिक्षण दिलाने की व्यवस्था करवाना प्रशिक्षित शिक्षकों के बढ़ने के पीछे उत्तरदायी कारक रहे हैं। युवाओं के रूझान को ध्यान में रखते हुए बी.एस.टी.सी. संस्थाओं में विशेष वृद्धि की जा सकती है। अपनी आवश्यकताओं एवं अभावों के चलते बिना शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त किये प्राथमिक स्तर की शिक्षा व्यवस्था से जुड़ जाने वाले अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षण प्राप्त प्रदान करने में सहायता देने के लिए राज्य सरकार द्वारा विशेष प्रोत्साहक योजना बनायी जा सकती है। शिक्षकों को उनके स्थान पर ही शिक्षक प्रशिक्षण देने की व्यवस्था करने के क्रम में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, शिक्षा निदेशालय और खुला विश्वविद्यालय के स्तर पर विशेष शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संघठन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

- बिर्दी, बिमलेश (1992). ए स्टडी ऑफ द ग्रोथ एण्ड डेवलपमेन्ट ऑफ द प्राइमरी एज्यूकेशन इन पंजाब फ्रॉम 1947 टू 1987, पीएच.डी. (एज्यूकेशन), पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला.
- चढ़ा, संगीता (2001). क्रिटिकल स्टडी ऑफ नर्सरी एज्यूकेशन इन देहली, पीएच.डी. एज्यूकेशन, इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन एज्यूकेशन फेकल्टी ऑफ एज्यूकेशन, जामिया–मिलिया इस्लामिया, न्यू देहली.

- चुआंगो, एल. (2004). एन एनालाइटिकल स्टडी ऑफ प्री. स्कूल एज्यूकेशन इन मिजोरम, इंडियन एज्यूकेशनल एब्सट्रेक्ट्स (प्राइमरी एज्यूकेशन), एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली, वो.–4 नम्बर–2 जुलाई–2004.
- कपाडिया, के.पी. (1984), ए स्टडी ऑफ द डेवलपमेन्ट ऑफ प्राइमरी एज्यूकेशन इन द स्टेट ऑफ गुजरात आफ्टर इन्डेपेन्डेन्स, अनपब्लिश्ड पीएच.डी. (एज्यूकेशन), वीर नर्मद साऊथ गुजरात यूनिवर्सिटी. सूरत, 1273.
- किंगडन, गीता गाँधी (2007). प्रोग्रेस ऑफ स्कूल एज्यूकेशन इन इण्डिया, डिपार्टमेन्ट ऑफ इकोनॉमिक्स, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड, 23 (2), 168–195.
- कौर, इंद्रजीत (1985). हायर एज्यूकेशन इन पंजाब फ्रोम 1882 टू 1982, पीएच.डी. (एज्यूकेशन), पंजाबी यूनिवर्सिटी 100.
- खांगज्राक्पम, आई. सिंह (2015). ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द डेवलपमेन्ट ऑफ प्राइमरी एज्यूकेशन इन द नॉर्थ–इस्टर्न रीजन ऑफ इंडिया विद स्पेशल रेफरेन्स टू मणिपुर, पीएच.डी. थिसिस, मणिपुर यूनिवर्सिटी, मणिपुर.**http://hdl.handle.net/10603/39207**
- कुकरेती, बी. आर एण्ड सक्सेना, मनोज (2004, अ). ड्रॉप आऊट प्रोब्लम्स अमंग ट्राइबल स्टुडेण्ट्स एट स्कूल लेवल, कुरूक्षेत्र, 52 (11), 26–30.
- कुकरेती, बी. आर एण्ड सक्सेना, मनोज (2004, ब). प्राइमरी एड्यूकेशन इन यू.पी.: एन एनेलिटिकल स्टडी, ग्यान जर्नल ऑफ एड्यूकेशन, 1(1), 1–7.
- कुमार, सुरेन्द्र एवं मिश्रा, मुरलीधर (2015). राजस्थान राज्य के अजमेर संभाग में प्राथमिक विद्यालय स्तर पर विद्यार्थी नामांकन की प्रवृत्ति का अध्ययन, जर्नल ऑफ एज्यूकेशनल एण्ड साइक्लोजीकल रिसर्च, जुलाई, 5 (2), 260–264.
- मयानी, जे.पी. (1989). ए स्टडी ऑफ हिस्टॉरीकल डेवलपमेन्ट ऑफ प्री प्राइमरी एज्यूकेशन इन गुजरात, पीएच.डी. (एज्यूकेशन), भावनगर यूनिवर्सिटी, भावनगर.
- मेहता, अरूण सी. (2001). साक्षरता पर प्राथमिक शिक्षा का प्रभाव, जनगणना–2001 के प्रारम्भिक आँकड़ों का विश्लेषण, परिप्रेक्ष्य शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक सन्दर्भ, वर्ष–8, अंक 1–2, नीपा, नई दिल्ली.
- मैखुरी, रमा (2005). स्टेट्स ऑफ एलीमेन्ट्री एज्यूकेशन इन रूरल एरिया ऑफ चमौली डिस्ट्रिक्ट ऑफ उत्तरांचल, इंडियन एज्यूकेशनल एब्सट्रेक्ट्स (प्राइमरी एज्यूकेशन), एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, वो. 8 नं.–1, जनवरी 2008, 35–36.
- मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डवलमेन्ट (1993). एजूकेशनल फॉर ऑलः द इण्डियन सीन, सेकेण्ड एडिशन, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डवलमेन्ट, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजूकेशन, न्यू देहली.
- एन.सी.ई.आर.टी. (1998). सिक्स्थ आल इंडिया एज्यूकेशनल सर्वे (1993–94), एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देल्ही.
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). सेवंथ आल इंडिया एज्यूकेशनल सर्वे, प्रोविसिओनल स्टेटिस्टिक्स एज ओन सितम्बर 30, 2002. एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली.
- एन.सी.ई.आर.टी. (2006). नेशनल फोकस ग्रुप ओन अर्ली चाइल्डहुड एज्यूकेशन, पोजीशन पेपर, एन. सी.ई.आर.टी., न्यू देल्ही.
- नंदा, रेणु (2006). कंसर्न अबाऊट प्राइमरी एज्यूकेशन इन रूरल एरिया : एन इन डेप्थ स्टडी ऑफ राजौरी डिस्ट्रिक्ट (जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट), इंडियन एज्यूकेशनल एब्सट्रेक्ट्स (प्राइमरी एज्यूकेशन), एन.सी.ई.आर.टी, नई देल्ही., वो. 34 नं.–4, फरवरी.
- न्यूपा (2006–07). डिस्ट्रिक्ट रिपोर्ट कार्ड, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, न्यूदेहली.

- न्यूपा (2007). एज्यूकेशन इन इंडिया अट अ ग्लांस, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ एज्यूकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, न्यू देल्ही.
- पाल, एस. पी. एंड पंत, डी. के. (1995). स्ट्रेटेजीज टू इम्प्रूव स्कूल एनरोलमेंट रेट इन इंडिया, जर्नल ऑफ़ एज्यूकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, 9 (2) 169–171.
- पाराशर, दीपशिखा (2011). राजस्थान राज्य में सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत बालिका शिक्षा हेतु किए जाने वाले प्रयास : एक प्रवृत्यात्मक अध्ययन (2005–2010) अप्रकाशित शोध अध्ययन (पीएच.डी), शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली.
- प्रधान, जी.सी. (2009). ए स्टडी ऑन ग्रोथ एण्ड प्रजेन्ट स्टेटस ऑफ एलीमेन्टरी एज्यूकेशन इन गोवा, जर्नल ऑफ इंडियन एज्यूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, 34, (4), फरवरी, 90–112.
- प्रकाश, एस. (1996). भारत में प्रारम्भिक शिक्षा का सार्वजनीनकरण, समस्यायें और संभावनायें, परिप्रेक्ष्य – शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, नीपा, नई दिल्ली, 3 (2).
- राल्ते, ललियनी (1990). एन एनालाइटिकल स्टडी ऑफ द प्राइमरी एज्यूकेशन इन मिजोरम ड्यूरिंग द पोस्ट–इंडेपेन्डेन्स पीरियड, पीएच.डी.(एज्यूकेशन), डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन नार्थ–इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी शिलॉंग–(मेघालय).
- सक्सेना, कृष्णा (2012). राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक विकास की प्रवृत्ति (1986–2008) का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ.
- शर्मा, अनुसूया (2010). कोटा संभाग में पारम्परिक संस्कृत शिक्षा के विकास (1990 से 2008–09) का अध्ययन, अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ.
- सिंह, मोनिका (2009). अ स्टडी ऑफ डेवलपमेन्ट ऑफ सैकेण्डरी एज्यूकेशन इन केरल एण्ड उत्तरप्रदेश यूजिंग एज्यूकेशन डेवलपमेन्ट इन्डेक्स, एम.फिल. डिजर्टेशन, न्यूपा, न्यू दिल्ली.
- शर्मा एस. पी. (1978). अ स्टडी ऑफ डवलपमेंट ऑफ प्राइमरी एज्यूकेशन इन देहली (1913–1968), अनपब्लिश्ड पीएच.डी. (एज्यूकेशन), कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरूक्षेत्र.
- सिंह, जे.पी. (2002). पूर्वोत्तर भारत में विद्यालय शिक्षा का प्रवाह और सम्भावनाएँ, जर्नल ऑफ इंडियन एज्यूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, फरवरी 2003, वो. 28 नं. 4.
- सिन्हा, ए. एण्ड सिन्हा, ए.के. (1995). प्राइमरी स्कूलिंग इन नार्थ इंडिया : अ फील्ड इन्वेस्टीगेशन, सेंटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अकादमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन, मसूरी.
- स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, सिक्सथ ऑल इण्डिया एजूकेशनल सर्वे स्टेट रिपोर्ट (राजस्थान), स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, उदयपुर, राजस्थान.
- सुराणा, अजय (2003). राजस्थान के एक जिले में शैक्षिण विकास का पार्श्व चित्र 1981–2000, एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.).
- त्रिपाठी, आर.एस. (1992). ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ डेवलपमेन्ट ऑफ हायर एज्यूकेशन इन उत्तर प्रदेश, सिन्स इन्डेपेन्डेन्स, अनपब्लिश्ड पीएच.डी. (एज्यूकेशन), कानपुर यूनिवर्सिटी.

*** Corresponding Author**

डॉ. मुरलीधर मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, एवं **सुरेन्द्र कुमार**, शोधार्थी
शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान – 304022
Email: dr.mdm@live.com, 9414028630 (M)